मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित

कहानी

पंच परमेश्वर

कॉमिक्स

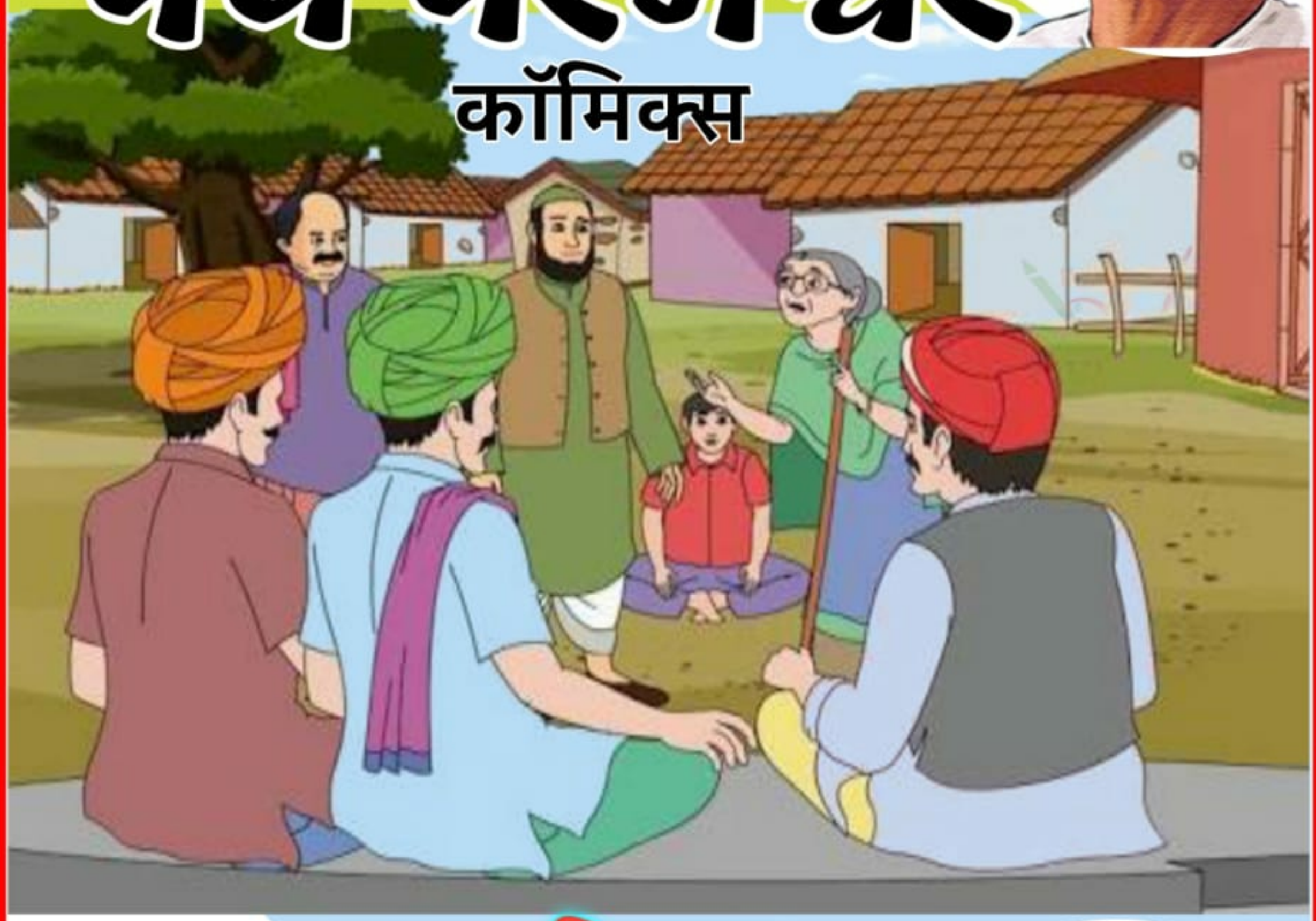

डिज़ाइन

ब्रजेश गुप्ता

जनपद - बस्ती

मिशन शिक्षण संवाद

Mission Shikshan Samvad

पंच परमेश्वर

लेखक: मुंशी प्रेमचंद जी, कॉमिक निर्माण: बृजेश गुप्ता

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। इस मित्रता का जन्म उसी समय हुआ था जब दोनों बालक ही थे। साझे में खेती होती थी। कुछ लेन देन में भी साझा था। दोनों को एक दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे और अलगू जब कभी बाहर जाते तो जुम्मन के भरोसे अपना घर छोड़ देते थे।

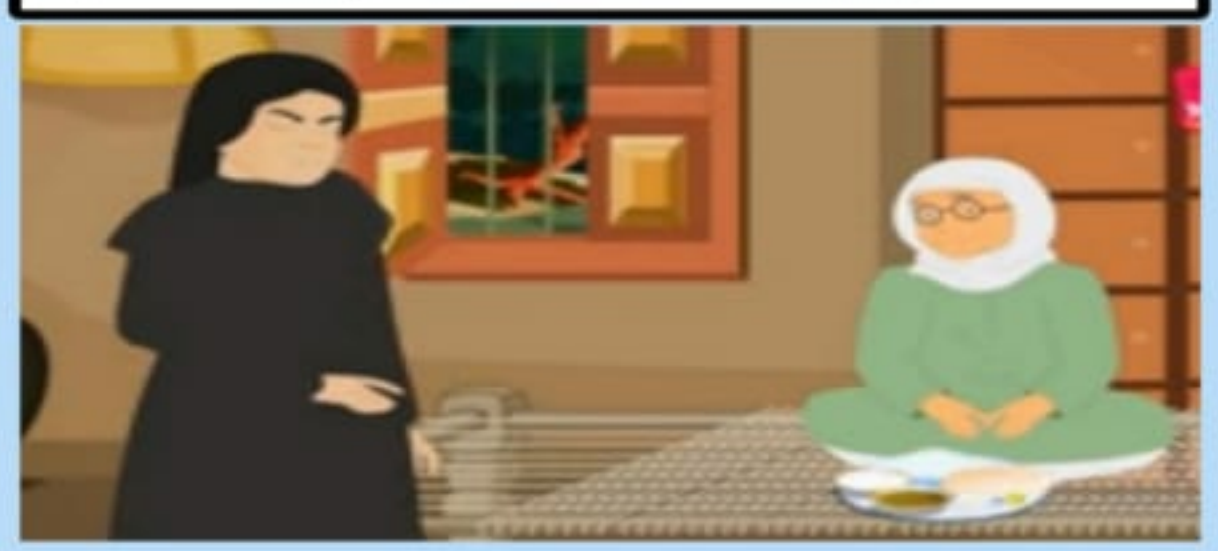

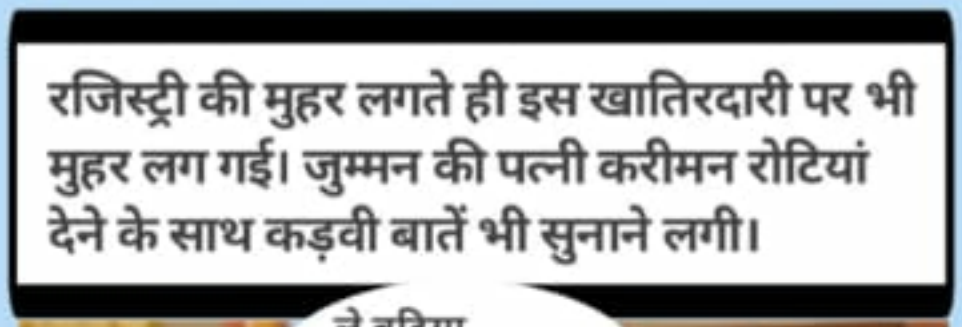

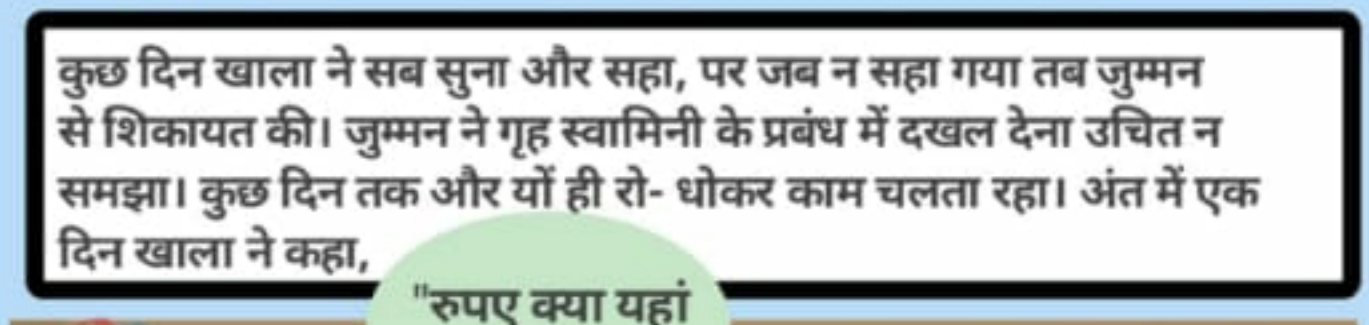

Mission Shikshan Samvad

खाला बिगड़ गई। उन्होनें पंचायत करने की धमकी दी।

पंचायत के लिए बूढ़ी खाला लोगों को संदेश देने लगी।

एक दिन संध्या के समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। जुम्मन शेख ने पहले से ही सारा प्रबंध कर रखा था। पंच लोग बैठ गए तो बूढ़ी खाला ने उनसे विनती की,

सरपंच किसे बनाया जाय, इस प्रश्न पर जुम्मन शेख और खालाजान में कुछ कहा - सुनी हो गई।

अंत में खाला बोलीं -

Mission Shikshan Samvad

जुम्मन शेख आनंद से फूल उठे, परंतु मन के भावों को छिपाकर बोले,

अलगू चौधरी सरपंच हुए। उन्होंने कहा,

अलगू चौधरी ने जुम्मन से जिरह शुरू की। जुम्मन चकित थे कि अलगू को हो क्या गया है? अभी तो यह मेरे साथ बैठे थे। अब इतने प्रश्न मुझसे क्यों पूछते हो? जुम्मन यह सब सोच ही रहे थे कि अलगू ने फ़ैसला सुनाया,

फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए। अलगू के फैसले की सभी लोग प्रशंसा कर रहे थे, पर इस फैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। जुम्मन को यह फैसला आठों पहर खटकने लगा।

जुम्मन इस ताक में थे कि किसी तरह अलगू से बदला लेने का अवसर मिले।
ऐसा अवसर जल्द ही जुम्मन के हाथ आया। अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी जोड़ी मोल लाए थे।

देव योग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। अब अकेला बैल किस काम का?

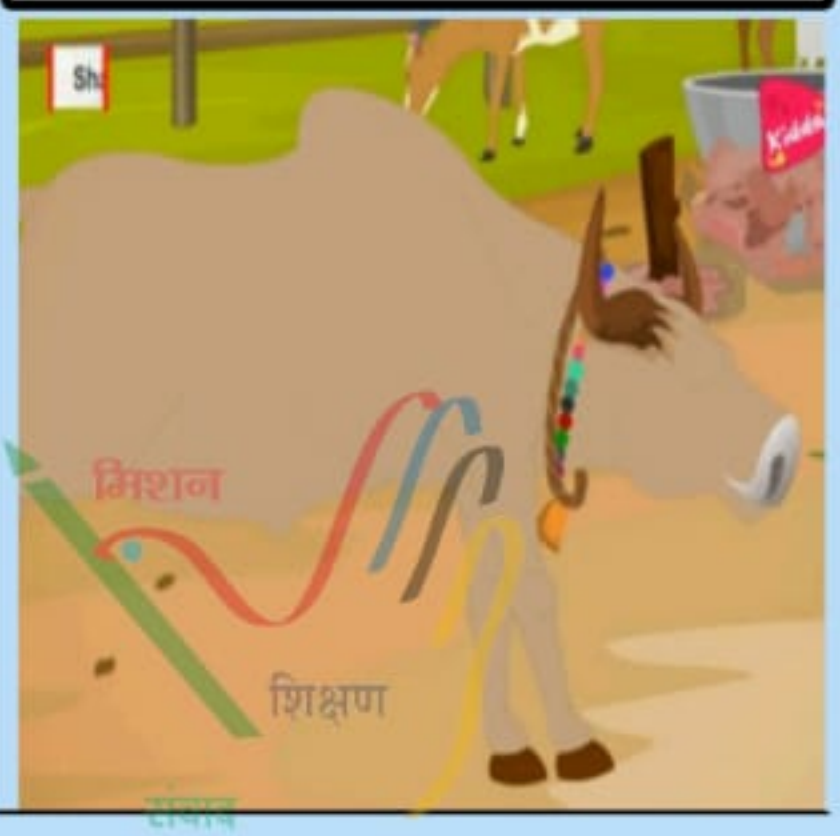

गांव में समझू साहू थे। उन्होंने एक महीने में दाम चुकाने का वादा करके चौधरी से बैल खरीद लिया।

समझू साहू ने नया बैल पाया तो लगे रगेदने। न चारे की फ़िक्र, न पानी की। वह दिन तीन तीन, चार - चार खेपें करने लगे।

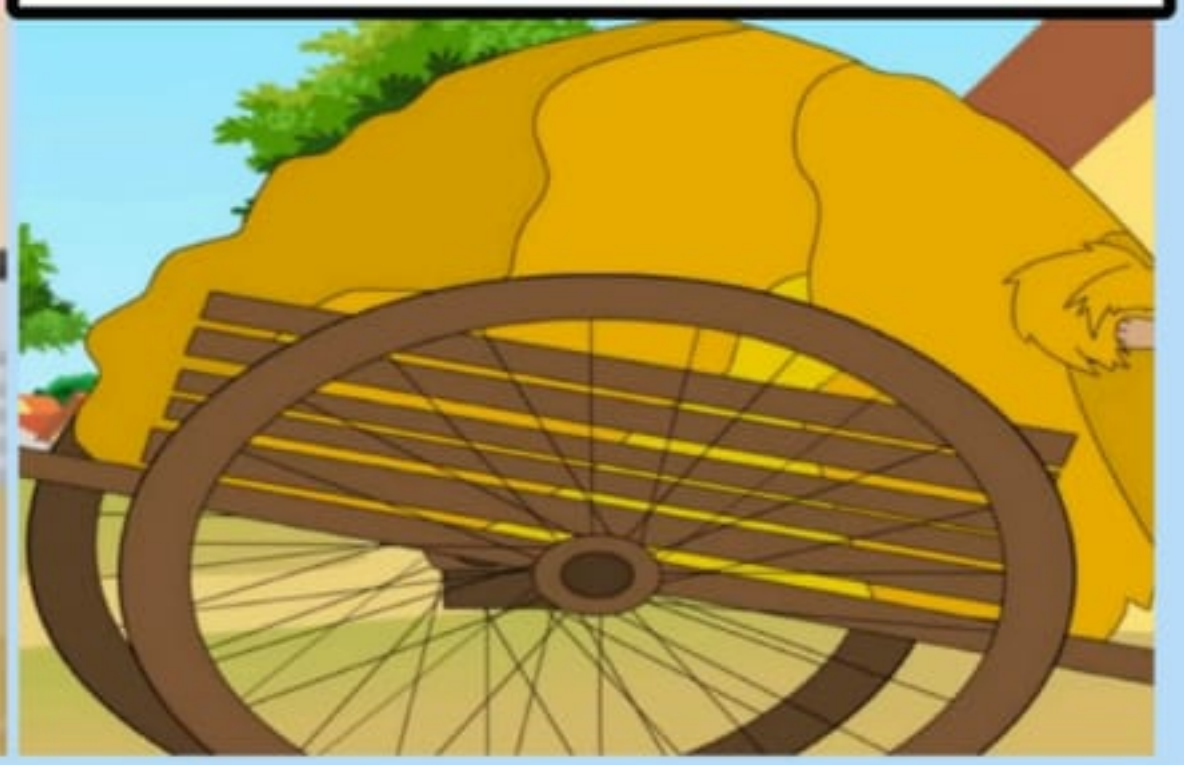

एक दिन साहू जी ने दूना बोझ लाद दिया। बैल ने जोर लगाया, पर वह आधे रास्ते में ही धरती पर गिर पड़ा। ऐसा गिरा कि फिर न उठा।

इस घटना को कई महीने बीत गए। अलगू जब बैल का दाम मांगते, तब साहू - सहु वाइन दोनों झल्ला उठते।

इसी तरह कई बार झगड़े हुए पर साहू जी ने बैल का दाम न चुकाया। लोगों ने अलगू और साहू जी को समझाया कि पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो उसे स्वीकार कर लो। दोनों लोगों ने हामी भर दी। उसी वृक्ष के नीचे पंचायत बैठी।

समझू साहू खड़े हुए और कड़क कर बोले,

सरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन में अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुए। सत्य से जौ भर भी टलना मेरे लिए उचित नहीं है।
पंचों ने दोनों से काफ़ी देर तक बहस की। अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया,

फ़ैसला सुनकर अलगू चौधरी फूले न समाए, उठ खड़े हुए और जोर से बोले,

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले से लिपट गए।अलगू रोने लगे इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

मुंशी प्रेमचंद (सन 1880-1936)

Design: बृजेश गुप्ता, 9935153699

संकलन

Mission Shikshan Samvad